आयुष तरंगिणी

e-magazine by AYUSH Department, Uttarakhand Govt

आयुष एवं आयुष शिक्षा विभाग
उत्तराखण्ड

May, 2026

VOL. 11

Special Edition On

Ayurveda in Modern-Day Emerging Diseases: An Integrative Approach to Prevention and Management

(आधुनिक समय की उभरती हुई बीमारियों में आयुर्वेद: रोकथाम एवं प्रबंधन के लिए एक समन्वित दृष्टिकोण)

Monthly Magazine | May 2026 Edition

आयुर्तरंगिणी

ई-मैगजीन के पाठकों के लिए

मंत्री, आयुष एवं आयुष शिक्षा का संदेश

मदन कौशिक
(मंत्री, आयुष एवं आयुष शिक्षा, उत्तराखण्ड)

प्रिय पाठकों,

हमारे लिए यह अत्यंत हर्ष और गौरव का विषय है कि "आयुर्तरंगिणी" ई-मैगजीन के माध्यम से उत्तराखंड राज्य में आयुष के क्षेत्र में हो रहे नवाचारों, उपलब्धियों एवं जनकल्याणकारी प्रयासों को एक व्यापक मंच प्रदान किया जा रहा है। यह पत्रिका हमारी प्राचीन चिकित्सा परंपराओं और आधुनिक स्वास्थ्य आवश्यकताओं के मध्य एक सशक्त सेतु के रूप में कार्य करेगी।

भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा में आयुर्वेद एवं अन्य आयुष पद्धतियों का विशेष महत्व रहा है। आज संपूर्ण विश्व प्राकृतिक एवं समग्र जीवनशैली की ओर अग्रसर है, ऐसे में आयुष पद्धतियाँ न केवल रोगों की रोकथाम एवं उपचार में, बल्कि स्वस्थ एवं समृद्ध समाज के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। उत्तराखंड सरकार एवं आयुष विभाग प्रदेश के नागरिकों तक गुणवत्तापूर्ण एवं सुलभ आयुष सेवाएँ पहुँचाने हेतु निरंतर प्रयासरत हैं। राष्ट्रीय आयुष मिशन के माध्यम से स्वास्थ्य अधोसंरचना, जनजागरूकता, अनुसंधान एवं नवाचार को बढ़ावा देने के लिए अनेक महत्वपूर्ण पहलें की जा रही हैं।

"आयुर्तरंगिणी" का यह विशेषांक “आधुनिक समय में उभरते रोगों में आयुर्वेद : रोकथाम एवं प्रबंधन हेतु एक समन्वित दृष्टिकोण” विषय पर आधारित है। वर्तमान समय में बदलती जीवनशैली, मानसिक तनाव एवं पर्यावरणीय चुनौतियों के कारण अनेक जटिल स्वास्थ्य समस्याएँ सामने आ रही हैं। ऐसे परिप्रेक्ष्य में आयुर्वेद अपनी समग्र एवं निवारक चिकित्सा प्रणाली के माध्यम से स्वास्थ्य संरक्षण की प्रभावी दिशा प्रदान करता है। इस विशेषांक में आयुर्वेद के मूल सिद्धांतों के साथ पंचकर्म – वसन्त ऋतु में शोधन चिकित्सा एवं कफज विकार विषय को भी प्रमुखता दी गई है। इसमें कफ दोष, शोधन चिकित्सा, ऋतुचर्या, पथ्यापथ्य तथा पंचकर्म की प्रमुख विधियों—विशेषतः वमन एवं विरेचन—की उपयोगिता को व्यावहारिक एवं चिकित्सकीय दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है।

मुझे विश्वास है कि यह विशेषांक विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं, चिकित्सकों तथा सामान्य जनमानस के लिए उपयोगी सिद्ध होगा और स्वास्थ्य-संरक्षण तथा आयुष के प्रति जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। मैं इस ई-मैगजीन के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों, विशेषज्ञों एवं सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि यह पहल आयुष के प्रचार-प्रसार एवं स्वस्थ समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगी।

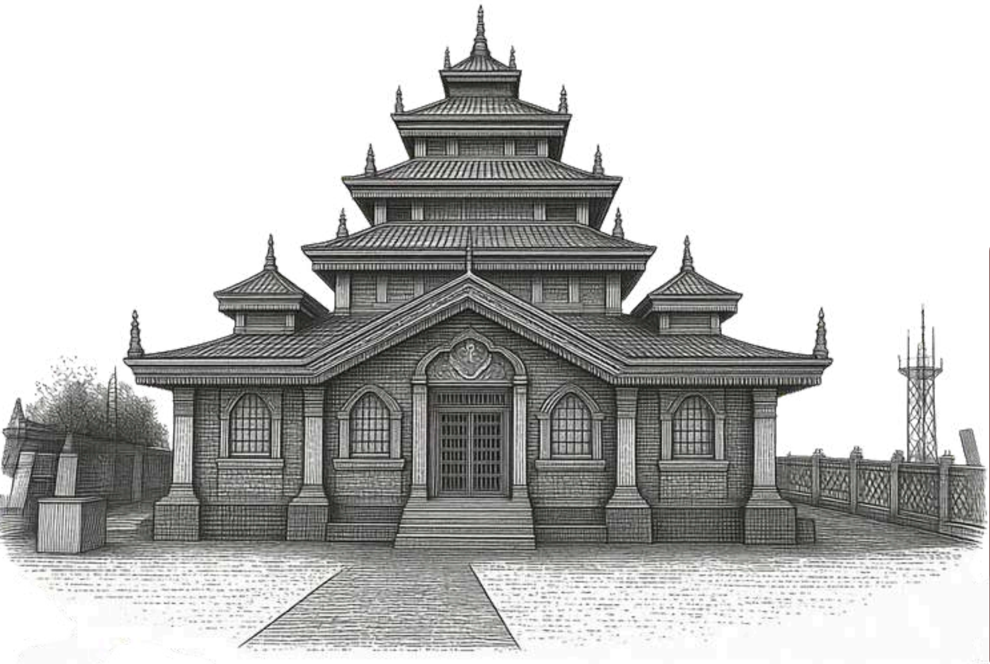

रंजना राजगुरु (आई०ए०एस)
(सचिव, आयुष एवं आयुष शिक्षा विभाग,
उत्तराखंड शासन)

आयुर्तरंगिणी

ई-मैगजीन के पाठकों के लिए

सचिव, आयुष एवं आयुष शिक्षा की कलम से

प्रिय पाठकों,

"आयुर्तरंगिणी" ई-मैगजीन के इस विशेषांक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका केवल ज्ञान के आदान-प्रदान का माध्यम नहीं है, बल्कि आयुष के सिद्धांतों, वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं स्वास्थ्य-संरक्षण संबंधी विचारों को समाज तक प्रभावी रूप से पहुँचाने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

माननीय आयुष एवं आयुष शिक्षा मंत्री श्री मदन कौशिक जी के कुशल नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में राज्य में आयुष सेवाओं को अधिक सुदृढ़, सुलभ एवं जनकेंद्रित बनाने की दिशा में निरंतर कार्य किया जा रहा है। राष्ट्रीय आयुष मिशन के अंतर्गत विभिन्न योजनाओं एवं नवाचारों के माध्यम से जनस्वास्थ्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रयास किए जा रहे हैं।

"आयुर्तरंगिणी" का यह विशेषांक “आधुनिक समय में उभरते रोगों में आयुर्वेद : रोकथाम एवं प्रबंधन हेतु एक समन्वित दृष्टिकोण” विषय पर आधारित है। आज के समय में जीवनशैली में तीव्र परिवर्तन, मानसिक दबाव तथा पर्यावरणीय प्रभावों के कारण स्वास्थ्य संबंधी नई चुनौतियाँ सामने आ रही हैं। ऐसे परिवेश में आयुर्वेद अपनी समग्र एवं निवारक अवधारणाओं के माध्यम से स्वास्थ्य संरक्षण की प्रभावी दिशा प्रदान करता है।

इस विशेषांक में पंचकर्म – वसन्त ऋतु में शोधन चिकित्सा एवं कफज विकार विषय को भी विशेष रूप से सम्मिलित किया गया है, जिससे पाठकों को ऋतु-अनुकूल चिकित्सा, दोष-संतुलन एवं स्वास्थ्य-संरक्षण संबंधी उपयोगी जानकारी प्राप्त होगी।

मुझे विश्वास है कि यह विशेषांक विद्यार्थियों, चिकित्सकों, शोधकर्ताओं एवं सामान्य जनमानस के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। मैं सभी पाठकों से अपेक्षा करती हूँ कि वे इस ज्ञानवर्धक प्रयास से जुड़ें तथा आयुष की उपयोगिता को व्यापक स्तर पर प्रसारित करने में सहयोग प्रदान करें।

डॉ. विजय कुमार जोगदण्डे (आई0ए0एस)
(निदेशक, आयुर्वेदिक एवं यूनानी सेवाएँ उत्तराखण्ड)

आयुर्तरंगिणी

ई-मैगजीन के पाठकों के लिए

निदेशक, आयुर्वेदिक एवं यूनानी सेवायें की कलम से

प्रिय पाठकों,

"आयुर्तरंगिणी" के इस विशेषांक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। यह प्रयास आयुष के विविध आयामों, स्वास्थ्य संबंधी उपयोगी जानकारियों तथा समाजोपयोगी विषयों को एक मंच पर लाने का एक सार्थक माध्यम है।

मैं इस अवसर पर माननीय आयुष एवं आयुष शिक्षा मंत्री श्री मदन कौशिक जी के दूरदर्शी नेतृत्व एवं सतत प्रेरणा तथा सचिव महोदय, आयुष एवं आयुष शिक्षा विभाग के मार्गदर्शन एवं सहयोग के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके निरंतर समर्थन से आयुष सेवाओं के विकास एवं जनकल्याण से जुड़े अनेक प्रयास सफलतापूर्वक संचालित हो रहे हैं।

इस विशेषांक का विषय “आधुनिक समय में उभरते रोगों में आयुर्वेद : रोकथाम एवं प्रबंधन हेतु एक समन्वित दृष्टिकोण” वर्तमान समय की आवश्यकता के अनुरूप अत्यंत प्रासंगिक है। इसके अंतर्गत आयुर्वेदिक सिद्धांतों के साथ पंचकर्म – वसन्त ऋतु में शोधन चिकित्सा एवं कफज विकारविषय पर भी विशेष सामग्री प्रस्तुत की गई है, जो स्वास्थ्य-संरक्षण एवं रोग-निवारण के व्यावहारिक पहलुओं को सरल रूप में समझाती है।

यह विशेषांक चिकित्सकों, विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं तथा सामान्य जनमानस सभी के लिए समान रूप से लाभकारी सिद्ध होगा। मैं सभी पाठकों से आग्रह करता हूँ कि वे इस विशेषांक का अध्ययन करें तथा आयुष के ज्ञान को अपने जीवन एवं समाज में अपनाने हेतु प्रेरित हों।

इस प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों, विशेषज्ञों एवं सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई।

आयुर्तरंगिणी

e-magazine by AYUSH Department, Uttarakhand Govt

May, 2026

(विशेषांक)

“आधुनिक समय की उभरती हुई बीमारियों में आयुर्वेद: रोकथाम एवं प्रबंधन के लिए एक समन्वित दृष्टिकोण”

{ Ayurveda in Modern-Day Emerging Diseases: An Integrative Approach to Prevention and Management }

Uttarakhand's GI-Tagged Medicinal Heritage:
An Integrative Strategy for Modern-Day Emerging Diseases

Dr Aishwary Srivastava
Dept. Of Panchakarma, Patanjali Bhartiya
Ayurvigyan Evam Anusandhan Sansthan

Abstract
Uttarakhand, often referred to as the "Natural Pharmacy of the World," possesses a unique bio-resource profile characterized by high-altitude medicinal flora and traditional landraces. Recently, the state achieved a milestone by securing Geographical Indication (GI) tags for 18 products, many of which serve as potent nutraceuticals and therapeutic agents. This article explores the pharmacological potential of GI-tagged assets such as Buransh (Rhododendron arboreum), Tejpatta (Cinnamomum tamala), and ancient millets (Mandua and Jhangora) in addressing emerging global health challenges, including metabolic syndrome, cardiovascular diseases, and post-viral complications. By leveraging the Uttarakhand Medicinal Plants Database (UMPDB) and integrating Ayurvedic principles with modern clinical validation, this paper proposes a strategic framework for the sustainable utilization of these heritage assets in modern integrative medicine.
Keywords: Uttarakhand, GI Tag, Medicinal Plants, Integrative Medicine, Rhododendron arboreum, Metabolic Syndrome.

1 . Introduction
Uttarakhand's Himalayan landscape is a reservoir of biodiversity, housing over 1,700 species of medicinal plants (Caterpillar Fungus - GB Pant National Institute of Himalayan Environment, 2020). The recent granting of Geographical Indication (GI) tags to 18 indigenous products—ranging from medicinal herbs to superfoods—marks a shift from local subsistence to global commercial and therapeutic recognition. In an era dominated by "emerging diseases" such as lifestyle-induced metabolic disorders and multi-drug resistant infections, these GI-tagged assets offer a standardized, provenance-verified source of bioactive compounds.

2. Profile of Key GI-Tagged Medicinal Assets
When Kapha accumulation is significant, Shamana therapy alone may not be sufficient. Vasanta Ritu naturally liquefies Kapha, making it the most suitable time for Shodhana Chikitsa.

2.1. Buransh (Rhododendron arboreum)
The crimson flowers of Buransh are more than a cultural symbol, they are a concentrated source of antioxidants and flavonoids. Traditional wisdom suggests its efficacy in heart health, a claim now supported by scientific evidence regarding its ability to reduce inflammation and protect the liver (A Journey Through Heritage:Geographical Indications of Uttarakhand | SankalpTaru Blog, 2025).

2.2. Tejpatta (Cinnamomum tamala)

One of the earliest products to receive a GI tag in the state, Tejpatta is widely used in Ayurveda for Prameha (diabetes) and digestive disorders. Its essential oils contain cinnamic aldehyde and eugenol, which are being studied for their role in improving insulin sensitivity and managing hyperlipidemia.

2.3. Mandua and Jhangora

Mandua (Finger Millet) and Jhangora (Barnyard Millet) are "lost superfoods" now recognized for their low glycemic index and high mineral content (A Journey Through 'Heritage: Geographical Indications of Uttarakhand' SankalpTaru Blog, 2025). These are essential in the dietary management of obesity and type-2 diabetes, which are currently reaching epidemic proportions globally.

2.4. Ratanjot (Arnebia euchroma)

Found in the high-altitude regions, Arnebia euchroma (Ratanjot) is prized for its naphthoquinone content, specifically shikonin. Recent pharmacological reviews highlight its anti-inflammatory, anti-microbial, and potential anti-cancer properties, particularly in inducing apoptosis in gastric cancer cells (Kazybekov et al., 2024).

3. Therapeutic Relevance to Emerging Diseases

Modern health crises are increasingly characterized by chronic inflammation and oxidative stress. The GI-tagged flora of Uttarakhand provides a multi-target approach:

4. Integrative Strategy: A Path Forward

To transition from traditional use to modern clinical application, an integrative strategy is required:

1. Digital Integration: Utilizing platforms like the Uttarakhand Medicinal Plants Database (UMPDB), which provides genomic and chemical descriptions of plants, to facilitate in-silico drug discovery (Kumar et al., 2018).
2. Standardization: GI tagging provides the first level of standardization. Further Fingerprinting of bioactive markers (e.g., shikonin levels in Arnebia) ensures batch-to-batch consistency for global markets.
3. One Health Approach: Recognizing the link between the health of the Himalayan ecosystem and human health. Sustainable harvesting practices are critical to prevent the extinction of high-value species like the Caterpillar Fungus (Ophiocordyceps sinensis), which contains over 30 bioactive compounds including immunomodulators (Caterpillar Fungus - GB Pant National Institute of Himalayan Environment, 2020).

4. Clinical Validation: Moving beyond ethno-medicinal claims to double-blind, placebo-controlled trials to integrate these products into mainstream Integrative Medicine protocols.

5. Conclusion

The GI-tagged heritage of Uttarakhand represents a synergy between ancient Ayurvedic wisdom and modern geographical branding. By focusing on standardized extracts and evidence-based applications, these Himalayan bio-resources can lead the way in managing modern emerging diseases. This ntegrative Strategy not only promises global health benefits but also ensures the socio-economic upliftment of the local Himalayan communities.

Bibliography

- A Journey Through Heritage:Geographical Indications of Uttarakhand | SankalpTaru Blog. (2025).- https://blog.sankalptaru.org/a-journey-through-heritagegeographical-indications-of-uttarakhand/
- Caterpillar Fungus - GB Pant National Institute of Himalayan Environment. (2020).- https://gbpihed.gov.in/PDF/Publication/Caterpillar.pdf
- Kazybekov, U., Kurmanbekova, G., & Törnük, F. (2024). Review of Arnebia euchroma as a Potential Medicinal Plant Based on Phytochemistry and Pharmacological Activity. Yüzüncü Yıl Üniversitesi Tarım Bilimleri Dergisi, 34(1), 176-191. https://doi.org/10.29133/yyutbd.1306035
- Kumar, A., Kumar, R., Sharma, M., Kumar, U., Gajula, M., & Singh, K. (2018). Uttarakhand Medicinal Plants Database (UMPDB): A Platform for Exploring Genomic, Chemical, and Traditional Knowledge Data, 3(1), 7. https://doi.org/10.3390/data3010007

सचिव महोदय की अध्यक्षता में आहूत बैठक की फोटोग्राफ्स

आयुष एवं आयुष शिक्षा विभाग
उत्तराखण्ड

आयुषतरंगिणी

e-magazine by AYUSH Department, Uttarakhand Govt

Monthly Magazine | May 2026 Edition

/ukdirayurved /ukdir_ayurved /ukdirayurved https://ayurved.uk.gov.in